आगूं आसिक ऐसे

आगूं आसिक ऐसे कहे, जो माया थें उतपन।
कोट बेर मासूक पर, उड़ाए देवें अपना तन।।
जीव माया के ऐसी करें, कैयों देखें दृष्ट।
ओ भी उन पर यों करें, तो हम तो हैं ब्रह्मसृष्ट।।
जो नकल हमारे की नकल, तिनका होत ए हाल।
तो पीछे पांउं हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल।।
इन खसम के नाम पर, कई कोट बेर वारों तन।
टूक टूक कर डार हूँ, कर मन वाचा करमन।।
जो आसिक अर्स अजीम के, तिन सिर नूरजमाल।
परीछा तिनकी जाहेर, सब्द लगें यों भाल।।
न्यारा निमख न होवहीं, करने पड़े न याद।
आसिक को मासूक का, कोई इन बिध लाग्या स्वाद।।
महामत कहें मेहेबूब के, रोम रोम लगे घाए।
इन अंग को अचरज होत है, अजूं ले खड़ा अरवाए।।